॥ श्रीः ॥

सूर्यकवच

पंडितरामस्वरूपशर्मकृत
भाषाटीकासहित
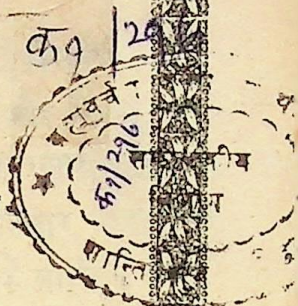
मुद्रक एवं प्रकाशकः

गङ्गाविष्णु श्रीकृष्णदास,

अध्यक्ष-"लक्ष्मीवेङ्कटेश्वर" स्टीम्-प्रेस

कल्याण--बम्बई.

भूमिका।

प्रियमित्रगण !

यह श्रीसूर्यनारायणजीका कवच है कि जिनकी महिमा समस्त भूमंडलमें जगमगा रही है, और जिनकी कृपाकटाक्षसे हम लोग सम्पूर्ण पदार्थोंको भली भांति देख सक्के हैं और जिनकी किरणोंद्वारा अंधकार भागता नजर आता है, जो हमारे शुभाशुभ कर्मके साक्षी हैं वे सर्वव्यापी सूर्यनारायणजी आपको इन कवचके ध्यान करनेसे मनोवांछित फल देवें, इस कवचको नित्यक्रियासे निवृत्त हो स्नानादि कर, एकाग्र चित्तसे केवल पाठ करनेसेभी मनुष्य मनोरथसिद्धिको पा सक्ता है, लीजिये यह १९ श्लोकवाला सूर्यकवचभी आपको भेंट है इसे आप आदिसे अन्ततक पढ लाभ उठावेंगे तो मैं अपने परिश्रमको सुफल जानूंगा।

रामस्वरूप शुक्ल,
(बीच) कठगर,
मुरादाबाद.

श्रीगणेशाय नमः ।

अथ

भाषाटीकासहितं

सूर्यकवचम् ।

श्रीसूर्य उवाच ।

साब सांब महाबाहो शृणु मे कवचं शुभम् ।
त्रैलोक्यमंगलं नाम फलदं परमाद्भुतम् ॥ १ ॥

अर्थ–श्रीसूर्यनारायणजी बोले कि, हे महाबाहो ! हे सांब ! मेरे बडे अद्भुत, श्रेष्ठ फल देनेवाले त्रैलोक्यमंगलनामक शुभ कवचको श्रवण करो ॥ १ ॥

यद्ध्यात्वामंत्रवित्सम्यक्फलमाप्नोति निश्चितम् ।
यद्धृत्वा च महादेवो गणानामधिपोऽभवत् २ ॥

अर्थ–कि जिसे ध्यान कर मंत्रज्ञाता अच्छे फलको निश्चय प्राप्त करता है. और जिसको धारण कर शिवजी गणोंके स्वामी हुए हैं ॥ २ ॥

पठनाद्धारणाद्विष्णुः सर्वेषां पालकोऽभवत् ।
एवमिन्द्रादयः सर्वे सर्वैश्वर्य्यमवाप्नुयुः ॥ ३ ॥

अर्थ—इसके पढने तथा धारण करनेसे विष्णु भगवान् सब मनुष्यादिकोंके पालन कर्त्ता हुए इसी प्रकार इन्द्रादि सम्पूर्ण देवता समस्त ऐश्वर्यको प्राप्त हुए हैं ॥ ३ ॥

कवचस्य ऋषिर्ब्रह्मा छंदोऽनुष्टुबुदाहृतम् ।
श्रीसूर्यो देवता चास्य सर्वदेवनमस्कृतः ॥४॥

अर्थ—इस कवचका ब्रह्मा ऋषि अनुष्टुप् छंद तथा सब देवोंसे नमस्कृत सूर्यदेवता कहा है ॥ ४ ॥

यशआरोग्यमोक्षेषु विनियोगः प्रकीर्तितः ।
प्रणवो मे शिरः पातु घृणिर्मे पातु भालकम् ५

अर्थ—यश (कीर्ति), निरोग तथा मोक्षके विषय विनियोग है. ओंकार मेरे शिरकी रक्षा करे तथा घृणि मेरे मस्तकको पालन करे ॥ ५ ॥

सूर्योऽव्यान्नयनद्वंद्वमादित्यः कर्णयुग्मकम् ।
ह्रीं बीजं मे मुखं पातु हृदयं भुवनेश्वरी ॥ ६ ॥

अर्थ–सूर्य दोनों नेत्रोंकी रक्षा करे तथा आदित्य दोनों कर्णोंको पालन करे ह्रीं बीज मेरे मुखकी रक्षा करे देवी मेरे हृदयको पालन करे ॥ ६ ॥

चंद्रबीजं विसर्गं च पातु मे गुह्यदेशकम् ।
अष्टाक्षरो महामंत्रः सर्वाभीष्टफलप्रदः ॥ ७ ॥

अर्थ–चन्द्रबीज मेरे गुदास्थानको पालन करे यह आठ अक्षरवाला महामंत्र समस्त कामना तथा फलका देनेवाला कहा है ॥ ७ ॥

अक्षरोऽसौ महामंत्रः सर्वतंत्रेषु गोपितः ।
शिवो वह्निसमायुक्तो वामाक्षीबिंदुभूषितः॥८॥

अर्थ–शिव (हकार), वह्नि (रकार) तथा वामाक्षी (ईकार), बिंदु (अनुस्वार) युक्त अर्थात् ह्रीं यह अक्षर महामंत्र है और सब तंत्रोंमें गोपनीय कहा है ॥ ८ ॥

एकाक्षरो महामंत्रः श्रीसूर्यस्य प्रकीर्तितः ।
गुह्याद्गुह्यतरो मंत्रो वांछाचिंतामणिः स्मृतः ९॥

अर्थ–एकाक्षरवाला यह सूर्यनारायणका मंत्र कहा है

यह मंत्र अत्यंत छिपाने योग्य है और अभिलाषाका देनेवाला है ॥ ९ ॥

शीर्षादिपादपर्यन्तं सदा पातु त्वमुत्तम ।
इति ते कथितं दिव्यं त्रिषु लोकेषु दुर्लभम् १०

अर्थ--हे उत्तम सूर्यनारायण ! शिरसे आदि लेकर चरणोंपर्यन्त आप नित्य मेरी रक्षा करो इस प्रकार तुमसे तीनों लोकोंमें दुर्लभ यह सुन्दर कवच कह दिया ॥ १० ॥

श्रीप्रदं कीर्तिदं नित्यं धनारोग्यविवर्द्धनम् ।
कुष्ठादिरोगशमनं महाव्याधिविनाशनम् ११॥

अर्थ--यह कवच लक्ष्मीप्रद तथा यशका देनेवाला धन, शरीरपुष्टिका बढानेवाला, कुष्ठ (कोढ) आदि रोगोंकी शान्ति करनेवाला है ॥ ११ ॥

त्रिसंध्यं यः पठेन्नित्यमारोग्यं बलवान् भवेत् ॥
बहुना किमिहोक्तेन यद्यन्मनसि वर्त्तते ॥१२॥

अर्थ--यह कवच जो मनुष्य तीनों कालमें पठन करे

तो निरोगी और पराक्रमी होय, इसमें बहुत प्रशंसा कर-
नेसे क्या ? जो जो मनोवांछित होता है ॥ १२ ॥

तत्तत्सर्वं भवत्येव कवचस्यास्य धारणात् ।
भूतप्रेतपिशाचाश्च यक्षगंधर्वराक्षसाः ॥ १३ ॥

अर्थ–वह सब इस कवचके धारण करनेसे सिद्ध होता
है, और भूत प्रेत पिशाच तथा यक्ष गंधर्व, राक्षस॥ १३॥

ब्रह्मराक्षसवैताला न द्रष्टुमपि तं क्षमाः ।
दूरादेव पलायंते तस्य संकीर्त्तनादपि ॥१४ ॥

अर्थ–ब्रह्मराक्षस वैतालादि उस (कवचधारी)के
देखनेमेंभी नहीं समर्थ होते हैं. इस (कवच) के नाम
मात्र लेनेसे दूरसेही भाग जाते हैं ॥ १४ ॥

भूर्जपत्रे समालिख्य रोचनागुरुकुंकुमैः ।
रविवारे च संक्रान्तौ सप्तम्यां च विशेषतः १५॥

अर्थ–रोली, धूप, केसरसे पूज भोजपत्रपै लिखकर,
इस मंत्रको रविवार तथा संक्रांतिके दिन और विशेष कर
सप्तमीके रोज ॥ १५ ॥

धारयेत्साधकः श्रेष्ठस्त्रैलोक्ये विजयी भवेत् ।
त्रिलोहमध्यगं कृत्वा धारयेद्दक्षिणे भुजे॥१६॥

अर्थ-जो साधक धारण करे वह त्रैलोक्यमें श्रेष्ठ और विजयी होता है सिद्धि चाहनेवाला मनुष्य तीन धातु (सुवर्ण चांदी तांबा) के बीचमें रखकर अर्थात तावीजबनाकर दाहिनी भुजामें धारण करे ॥ १६ ॥

शिखायामथवा कंठे सोऽपि सूर्यो न संशयः ।
इति ते कथितं सांब त्रैलोक्यमंगलादिकम् १७

अर्थ-शिखामें अथवा गलेमें धारण करनेसे वहभी सूर्यवत् होता है इसमें कुछ संदेह नहीं. हे सांब तुमसे यह त्रैलोक्यमंगलनामक ॥ १७ ॥

कवचं दुर्लभं लोके तव स्नेहात्प्रकाशितम् ।
अज्ञात्वा कवचं दिव्यं यो जपेत्सूर्यमुत्तमम् १८

अर्थ-दुर्लभ कवच आपके स्नेहसे प्रकाश किया, जो मनुष्य श्रेष्ठ कवचको विना जाने सूर्यनारायणका जाप करे ॥ १८ ॥

सिद्धिर्न जायते तस्य कल्पकोटिशतैरपि ।
इत्यस्मात्सर्वैरेव धार्यं त्रैलोक्यमंगलम् ॥१९॥

अर्थ-उस मनुष्यको सौ करोड कल्पोंमेंभी सिद्धि नहीं होती है इस कारण सब पुरुषोंको यह त्रैलोक्य-मंगलकवच धारण करना उचित है ॥ १९ ॥

इति श्रीमच्छुक्ककान्यकुब्जकुलावतंसपंडितवर्यमुरादाबा-दवास्तव्यश्रीमान्गणेशप्रसादकविपुत्रेण पण्डित-रामस्वरूपशर्मणा रचितभाषाटीकोपेतं रुद्रया-मलान्तर्गतं त्रैलोक्यमंगलं नाम कवचं समाप्तम् ।
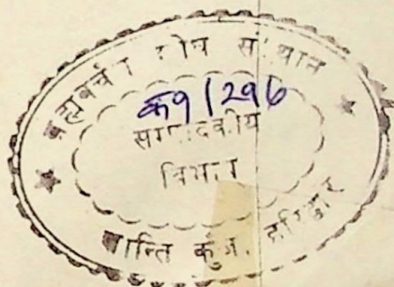
पुस्तकें मिलने के स्थान :–

१. खेमराज श्रीकृष्णदास,
श्रीवेंकटेश्वर स्टीम् प्रेस,
खेमराज श्रीकृष्णदास मार्ग,
सातवीं खेतवाड़ी खम्बाटा लेन
बम्बई–४०० ००४

२. गंगाविष्णु श्रीकृष्णदास,
लक्ष्मीवेंकटेश्वर स्टीम् प्रेस,
व बुक डिपो,
अहिल्या बाई चौक, कल्याण,
(जि० ठाणे–महाराष्ट्र)

३. खेमराज श्रीकृष्णदास, चौक–वाराणसी (उ. प्र.)